Q:- **युधिष्ठिर के प्रति वनेचर की उक्ति का वर्णन अपने शब्दों में करें।**

Ans:- प्रबन्ध काव्यों में काव्यसौष्ठव के लिए संवादात्मकता का होना आवश्यक है। जिस प्रकार व्यवहारिक जीवन में मनुष्य की बातचीत करने की प्रणाली उसके चरित्र का मापदंड बन जाती है उसी प्रकार काव्य के कथोपकथन का भी प्रभाव उनके चरित्र एवं अन्य क्रियाकलापों पर पड़ता है। मनुष्य की बाह्य आकृति तथा साज-सज्जा उसके समृद्ध अथवा असमृद्ध जीवन की सूचिका है, किन्तु उसके मनोभावों की जानकारी उसके वार्तालाप से ही होती है। क्योंकि सुकुमार, कठोर तथा मधुर भावनाओं एवम् वृत्तियों का विकास संवाद या कथोपकथन द्वारा ही करता है। महाकवि कालिदास द्वारा के संवाद विशेष महत्वपूर्ण हैं:- कुमार संभव ब्रम्हचारी-पार्वती संवाद तथा रघुवंश का सिंह-दिलीप-संवाद। महाकवि कालिदास के सदृश ही अलंकृत शैली के प्रथम प्रतिनिधि महाकवि भारवि ने भी स्वरचित महाकाव्य 'किरातार्जुनीयम्' में संवादात्मकता का सुचारु सन्निवेश किया है। इनके महाकाव्य में संवाद विन्यास बड़ी खूबी के साथ किया गया है कथा का ओघ संवादों द्वारा ही गतिमान है। इसकी पुष्टि के लिए प्रथम सर्ग में सन्निविष्ट वनेचर गुप्त दूत के वचनों को ही देखा जा सकता है। उक्ति-प्रत्युक्ति, पूर्व पक्ष- अपर पक्ष तथा अपना पक्ष समर्थन करने हेतु प्रत्युक्तियों, राजनैतिक दूरदर्शिता आदि कवि की प्रखर प्रतिभा के सुस्पष्ट परिचायक हैं। हमें यहाँ वनेचर की उक्ति को ही उपन्यस्त करना है। वह इस प्रकार है:-

कुरु देशाधिपति राजा दुर्योधन की राजलक्ष्मी की सर्वाधिका प्रजा संबंधिनी व्यवहारवृत्ति की अवगति के लिए धर्मराज युधिष्ठिर के द्वारा नियुक्त

ब्रह्मचारी छद्मवेशधारी गुप्तचर किरात शत्रु के सम्पूर्ण वृत्तान्त को पूर्णतः जानकर द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास आता है। सर्वप्रथम वह युधिष्ठिर को विनम्र भाव से प्रणाम करता है। तदुपरान्त शत्रु द्वारा स्वायत्तीकृत पृथ्वी का यथातथ्य वृत्तान्त उनके समक्ष उपन्यस्त करता है। वस्तुतः वह वनेचर युधिष्ठिर का हित चिन्तक है। इसलिए दुर्योधन के अनुशासन का यथातथ्य वर्णन प्रस्तुत करने में वह जरा भी हिचकिचाता नहीं। इसका स्पष्ट कारण यह है कि हित चिन्तक असत्य-प्रिय कथन करना कदापि नहीं ~~चाहते~~ चाहते (न विव्यथे तस्य मनो न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः।) दुर्योधन के अनुशासन से संबद्ध वह जो सूचना देता है वह प्रमाण पुरस्सर है वह कहता है —

यद्यपि दुर्योधन राज्यारोहण कर चुका है तथापि वनवासी आपसे पराभव की उसे सतत आशंका बनी रहती है। अतः छलकपट से हरण किये हुए राज्य को अब वह नीति से जीतना चाहता है। वह धूर्त तथा चतुर दुर्योधन आपको सर्वदा के लिए पराजित करने का महत्वाकांक्षी हो गया है। अतः सद्गुणों में आपसे अपने को उत्कृष्ट बतलाता है तथा यश का विस्तार कर रहा है। उसकी यह दृढ़ धारणा है कि ऐश्वर्य की वृद्धि के क्रम में दुर्जनों के साथ मित्रता करने की अपेक्षा महात्माओं से विरोध करना कहीं अच्छा है। उसको यह भलीभाँति ज्ञात है कि दुर्जनों के साथ किसी भी प्रकार की मित्रता अच्छी नहीं होती।

काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य, इन छह शत्रुओं पर वह पूर्णतः विजय प्राप्त कर चुका है। मनुप्रोक्त प्रजापालन पद्धति का

अवलंबन कर वह अनुशासनरत है। वस्तुतः मनुक शासनपद्धति सर्वसाधारण को अगम्य है। परन्तु वह इस मार्ग का अहर्निश व्यापन करता रहता है इसलिए आलस्यरहित होकर रात-दिन का यथोचित विभाग कर (अर्थात अमुक समय में अमुक कार्य करना औचित्यपूर्ण है, ऐसा निश्चय कर) वह नीतिपूर्वक सतत उद्योगरत रहता है। निराभिमान वह दुर्योधन निष्कपट रूप से सेवकों से स्नेहयुक्त मित्रवत व्यवहार करता है मित्रों से ज्ञातिवत, ज्ञातिजनों से बन्धुवत तथा बन्धुजनों के साथ ऐसा व्यवहार करता है जिससे वे स्वयं को ही शासक समझें। तात्पर्य यह कि वह सबके साथ आदरपूर्वक व्यवहार करता है ताकि लोग उसे सज्जन समझें।

धर्म-अर्थ-~~काम~~रूप काम रूप त्रिविध पुरुषार्थों का समान रूप में वह अनुष्ठान करता है। त्रिवर्ग में किसी के साथ पक्षपात नहीं करता। किसी का आदर एवं किसी का अनादर नहीं करता। सबके प्रति उसका समभाव है। तीनों का समविभाग करके अनासक्त भाव से वह उनका सेवन करता रहता है। परिणामतः त्रिवर्ग परस्पर एक दूसरे का बाधक नहीं होता। इससे यह स्पष्ट प्रतीति होती है मानो गुणानुराग के कारण मित्रत्व को प्राप्त किए हुए के सदृश एक दूसरे के पूरक बनकर वे वृद्धि को प्राप्त कर रहे हैं। इस प्रकार प्राचीन भारतीय दृष्टिकोणानुसार पुरुषार्थत्रय में सामंजस्य स्थापितकर वह शासनरत है। उस दुर्योधन की मधुरवाणी दान प्राचुर्य के साथ ही सदैव प्रवृत्त होती रहती है। वह सत्कारपूर्वक दानकार्य करता है। उसके द्वारा किया जाने वाला सत्कार भी गुणानुरोध के कारण ही होता है।

सामादि उपायचतुष्टय के प्रयोग में वह अत्यन्त चतुर एवम् निपुण है।

जितेन्द्रिय वह राजा दुर्योधन धनोपलब्धि की आकांक्षा से या क्रोध के वशीभूत होकर कदापि दंड नहीं देता। उसके शासन में दण्डविधान उत्कृष्ट कोटि का है। न्यायाधीश के द्वारा दण्डनीय ठहराये गए अपराधियों को ही वह अपना कर्तव्य समझकर अभिदण्डित करता है। इस कार्य में वह मित्र, शत्रु तथा पुत्र के प्रति भी समान दृष्टि रखता है। यद्यपि वह मन में सदा आपसे सशंकित रहता है तथापि आत्मरक्षा हेतु चारों ओर सेवकों को नियुक्त कर स्वयं निःसन्देहवत् आकृति को धारण कर रहता है। कार्य के सफल-समापन के पश्चात् सेवकों को प्रचुर मात्रा में धन देकर पुरस्कृत करके इस उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता है। वह साम, दानादि उपायचतुष्टय को उचित स्थानों पर उचित विभागों द्वारा समादृत करता है परिणामतः ऐसा लगता है कि वे उपायचतुष्टय परस्पर स्पर्धा में रहकर भविष्य में दिनानुदिन बढ़नेवाली अर्थसम्पत्ति की वृद्धि कर रहे हैं। उनके अनुग्रह की कामना करने वाले सामन्त नृपगणों के रथों के घोड़ों से उसके सभाभवन का प्रांगण सदा घिरा रहता है। सामन्तों के द्वारा उदाहरणस्वरूप प्रदत्त गजरत्नों के कपोलों से निरन्तर चुनेवाले मदजल से वहाँ हमेशा आर्द्रता बनी रहती है तथा बड़ी सुगन्ध का अनुभव होता है। वह सुगन्ध दुर्योधन की समृद्धि की सूचिका है।

वह अपने सम्पूर्ण राज्य में दीर्घकाल से कृषिक्षेत्रों में निरन्तर सिंचाई की योजना का कार्यान्वयन करा रहा है।

नहर - जलाशय - कुएँ - तड़ाग - बावड़ी आदि सिंचाई के साधनों का निर्माण कर दिया है। परिणामतः खेती की अच्छी व्यवस्था है। राज्य के कृषक खेती के लिए वर्षाजल पर आश्रित नहीं रहते। बिना जुती जमीन में उत्पन्न होने-वाले धान्यविशेष के सदृश नदीमातृक उस प्रदेश में विपुल अन्न उत्पन्न होता है परिणामतः खेतीहर किसानवर्ग अत्यन्त प्रसन्न है। प्रजाजनों को यथेष्ट अन्नलाभ होता है उसके द्वारा अनुशासित जनपदों की भूमि शस्यशालिनी है। राजा दुर्योधन ने सिंचाई का साधन निर्माण कर कृषि कार्य को सुखसाध्य बना दिया है। महान यशस्वी एवं दयालु राजा दुर्योधन की प्रजापालन नीति से उसके राज्य में सर्वत्र शांति है। राज्य में किसी प्रकार के उपद्रव की अनुपस्थिति के परिणामस्वरूप लोग निर्विघ्न प्रचुर मात्रा में धनोपार्जन करते हैं तथा राजा को भी कर स्वरूप प्रचुर धन की उपलब्धि होती है। इससे स्पष्ट है कि राजा तथा प्रजा दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।

राजा के द्वारा यथावसर धनादि से पुरस्कृत, ~~अलंकृत~~ मनस्वी रणक्षेत्र में अपनी वीरता के प्रदर्शन के परिणामस्वरूप ख्यातिलब्ध महाबली वीर सैनिक कृतज्ञ सैनिक अपनी प्राणों की भी बाजी लगाकर कृतज्ञ दुर्योधन का हर प्रकार से हित करने हेतु निरंतर तत्पर रहते हैं। इससे स्पष्ट है कि उसके सैनिक भी उससे अत्यंत प्रसन्न हैं। फलस्वरूप वे अपने कार्यों को सच्चाई तथा ईमानदारी से सम्पन्न करने में सदा निरत रहते हैं।

दुर्योधन की एक बड़ी विशिष्टता यह है कि वह प्रत्येक कार्य को आद्योपान्त

सम्पन्न करके ही दम लेता है। वह सच्चरित्र गुप्तचरों को नियोजित कर अन्य राजाओं के कार्यकलापों की पूर्णतः जानकारी प्राप्त कर लेता है। उसके द्वारा किए जानेवाले कार्यों की पूर्वागति विधाता की इच्छा के सदृश ही किसी को भी नहीं हो पाती। केवल परिणाम से ही उसके कार्यों की अनुमीति की जा सकती है। उसे प्रत्यंचा चढ़ा हुआ धनुष कभी उठाना नहीं पड़ता और न उसका मुख कमल ही क्रोध से विकृत होता है। उसके गुणानुराग के कारण ही अन्य सामन्तगण उसके शासन को मालावत् नतमस्तक होकर स्वीकार करते हैं। सर्वत्र उसकी आज्ञा अप्रतिहत रूप से पालित होती है। वह नवयौवन प्रगल्भ अपने कनिष्ठ भ्राता दुःशासन को युवराज कार्य में विनियुक्त कर पुरोहित के निर्देशानुसार अश्रान्त भाव से यज्ञों में हविप्रदान द्वारा अग्निदेव को प्रसन्न करता है। वह पूर्णतः शत्रुरहित एवम् स्थिर भविष्य वाला है। उसके शासन का विस्तार समुद्रपर्यन्त भूमण्डल तक है लेकिन उसके चित्त में आपकी ओर से हमेशा भय एवम् आशंका बनी रहती है। यह बिल्कुल औचित्यपूर्ण कथन है कि बलवान् के साथ विरोध का परिणाम हमेशा अनिष्टकर ही होता है (अहो दुरन्ता बलवद् विरोधिता)।

अन्त में युधिष्ठिर वनेचर से प्रश्न करते हैं कि तुमको यह कैसे ज्ञात हुआ कि मुझसे दुर्योधन निरंतर सशंकित रहता है? इस प्रश्न का समाधान करते हुए चर कहता है कि मैंने गुप्तचर के रूप में उसके राज्य के परिभ्रमण क्रम में लोगों को आपका नाम लेते हुए आपस में बातचीत करते सुना। मैंने यह अनुभव किया कि आपके नाममात्र से इन्द्रपुत्र अर्जुन

के पराक्रम को स्मरण करके वह राजा दुर्योधन विषवैद्य द्वारा उच्चारित विषनिवारक मंत्राक्षरों से पीड़ित होनेवाले सर्प के सदृश नतमस्तक होकर व्यथित होता है। मैंने दुर्योधन तथा उसके राज्य की वर्तमान एवं वास्तविक स्थिति आपके सम्मुख निवेदित कर दी। मेरी राय में आपके प्रति छल करने हेतु उचित उस दुर्योधन को समुचित प्रतिकारात्मक उत्तर शीघ्रातिशीघ्र देना परमावश्यक है।

इस प्रकार उपर्युक्त बातों को निवेदित कर वनवासियों का स्वामी वह किरात गुप्तचर राजा युधिष्ठिर के द्वारा यथोचित पुरस्कृत होकर चला गया।

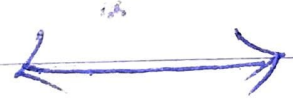

END.